उर्वरको का प्रयोग :–

नेत्रजन : 20 किलोग्राम / हे॰

स्फुर : 50 किलोग्राम / हे॰

पोटाश : 20 से 30 किलोग्राम / हे॰

खरपतवार नियंत्रण :– बुआई के 30–45 दिनों बाद खुरपी द्वारा निकौनी करनी चाहिए । रायासनिक नियंत्रण हेतु बुआई के 1 से 3 दिनों के अन्दर 2 ली॰ लासो 1000 लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें ।

पौधा संरक्षण :– फली छिद्रक 2 ली. एण्डोसल्फान 30 ई. सी. 1000 ली पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें । पहला छिड़काव तब करें जब 50 प्रतिशत फूल लग जाएँ । दूसरा छिड़काव तब करें जब फली निकलना शुरू हो जाए और तीसरा छिड़काव तब करें जब 50 प्रतिशत फली निकल आए ।

डा० रत्नेश कुमार झा

कृषि विज्ञान केन्द्र माँझी, सारण

अरहर की वैज्ञानिक खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र, माँझी, सारण

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

समस्तीपुर, बिहार

बिहार राज्य में दलहनी फसलों में अरहर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इससे हमें प्रोटीन, खनिज लवण, विटामिन और ऊर्जा प्राप्त होती है। शाकाहारी लोगों के लिए यह खासतौर से स्थान रखता है। उत्पादन की दृष्टि से अरहर का स्थान चना के बाद आता है और देश के कुल दलहन उत्पादन का आधा भाग इन दोनों फसलों से ही प्राप्त होता है।

मिट्टी का चुनावः अरहर की खेती हल्की एवं भारी दोनों प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है बशर्ते उसमें चूना की पर्याप्त मात्रा हो और पानी के निकास की समुचित व्यवस्था हो क्योंकि जलजमाव से अरहर के पौधे सूख जाते हैं। जहाँ जलनिकास की समुचित व्यवस्था का अभाव हो वहाँ इसकी खेती मेंड़ बनाकर की जा सकती है। अरहर की खेती 5 से 8 पी॰ एच॰ वाली मिट्टी में की जा सकती है पर अधिक उपज के लिए 6.5 से 7. 5 पी॰एच॰ अर्थात् उदासीन मिट्टी को अच्छा माना गया है। अत्यधिक क्षारीय मिट्टी में अंकुरण कम होता है और उपज में कमी आ जाती है। अरहर अत्यधिक ठण्ढ़क और पाला को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। इसलिए दिसम्बर–जनवरी महीने में यदि पाला पड़ता है तो फसल की सुरक्षा के लिए सिंचाई करनी चाहिए ।

प्रभेदों का चुनाव :–

प्रभेद	अवधि (दिन)	उपज (क्वि॰/ हे॰)	उपयुक्त क्षेत्र	बुआई का समय
बी.आर. 65	200–220	16–18	भागलपुर एवं पटना प्रमण्डल	15 जून से 10 जुलाई
बहार	265–275	25–30	उत्तरी बिहार एवं भागलपुर	1 जुलाई से 31 जुलाई (शुद्ध फसल
				जून (मक्का के साथ)
पूसा–9	250–260	20–25	उत्तरी बिहार एवं भागलपुर	1 जुलाई से 31 जुलाई

खेती की तैयारी : अरहर की खेती के लिए मिट्टी का हल्का होना आवश्यक है। इसके लिए एम.बी. प्लाव से एक गहरी जुताई तथा देशी हल या नौ फाड़ा से 2 या 3 हल्की जुताई करनी चाहिए । जल निकास के लिए 20 मीटर के अन्तराल पर बिहार जूनियर रीजर से नाली बनानी चाहिए ।

बुआई की दूरी :

मिश्रित खेती : पंक्ति से पंक्ति की दूरी 75 से.मी.
पौधे से पौधे की दूरी 20 से. मी.

खरीफ खेती : पंक्ति से पंक्ति की दूरी 50 से 60 से. मी.
पौधे से पौधे की दूरी 25 से. मी.

शरदकालीन खेती : पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से. मी.
पौधे से पौधे की दूरी 15 से. मी.

बीज दर :

खरीफ खेती : 20 किलोग्राम / हे.

शरदकालीन खेती : 50 किलोग्राम / हे.

बीजोपचार :– बुआई से 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम डायफोल्टान, थीरम, कैप्टान या ब्रैसिकोल प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करनी चाहिए । बुआई से ठीक पूर्व उपयुक्त राइजोबियम कल्चर से बीजोपचार करनी चाहिए ।